

# SOUVENIR

राष्ट्रीय सेमीनार

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता अभिवृद्धि :

चुनौतियाँ एवं समाधान

**National Seminar**

**Quality Improvement in Higher Education :  
Challenges & Remedies**

**27 January, 2018**



**Sponsored by**

**Department of Higher Education (U.P.)**



**Organized by**

**Government Degree College Pihani, Hardoi (U.P.)**

Website : [www.gdcpihani.org](http://www.gdcpihani.org) • email : [principal@gdcpihani.org](mailto:principal@gdcpihani.org)

Contact : 05853-262065



संरचनात्मक ढाँचे के रूप में कुछ अच्छा बनाया तो ढाँचागत सुविधाओं के नाम पर शिक्षा इतनी महँगी कि डिग्री से पूर्व ही लोन भी सुलभ हो गया तो शिष्य-माता पिता-परिवार कर्ज में भी डूब गया। महँगी से महँगी शिक्षा के बाद उसके अनुरूप नौकरी मिल सकेगी या नहीं ईश्वर जाने।

## कानपुर वि. वि. से सम्बद्ध कालेजों की शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

डॉ. नीतू सिंह तोमर,

एम.ए., पी.-एच.डी. समाजशास्त्र,

पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली-११०००२

केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा संचालित जनसामान्य के कल्याण के लिए शैक्षिक योजनाओं के अध्ययन उपरान्त मैंने उ.प्र. के जनपद फर्रुखाबाद के दरिद्र व्यक्तियों की शैक्षिक समस्याओं के अन्तर्गत कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 36 डिग्री कालेजों सहित केन्द्रीय, राजकीय, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, कस्तूरबा, मूकबधिर, आश्रम पद्धति, निजी, एडिड, अनएडिड विद्यालयों, प्रौढ़शिक्षा-आँगनवाड़ी केन्द्रों, पालीटेक्निक, आई.टी.आई. पब्लिक स्कूलों मान्यता एवं गैर मान्यता प्राप्त विद्यालयों, मदरसों, ईश्वरीय विश्वविद्यालयों में जाकर शिक्षण एवं प्रबन्धकीय व्यवस्था देखी तथा अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं ग्राम-नगर के शिक्षित-अशिक्षित बच्चों, किशोरों, युवाओं, प्रौढ़ों, वृद्धों से वार्ता कर उनकी शिक्षा और निरक्षरता की वास्तविक स्थिति सहित शैक्षिक समस्याओं का मूल्यांकन किया। जिसके परिणामस्वरूप 90-95% कृषक-मजदूर निरक्षर मिले। ग्रामीण क्षेत्रों की लगभग 85-95% स्त्रियाँ, 80-90% पुरुष, शहरी क्षेत्रों में लगभग 80-90% स्त्रियाँ, 70-80% पुरुष अशिक्षित और निरक्षर मिले। दरिद्र बस्तियों में यह स्थिति और भी भयावह मिली जहाँ की शिक्षा और निरक्षरता 95-100% बनी हुई है। निम्न से उच्च शिक्षित अधिकांश छात्रों, किशोरों, युवाओं को न्यूनोदय एवं सूर्यास्त की दिशाओं एवं अक्षरों का ज्ञान नहीं है। अधिकांश नहीं जानते हैं कि वे किस जनपद-प्रदेश के निवासी हैं। लिखना-पढ़ना उनके वश की बात नहीं। निरक्षरता और अज्ञानता उनके पतन की नियत बन चुकी है।

फर्रुखाबाद जनपद में संचालित छत्रपति शाहूजी महाराज वि. वि. कानपुर से सम्बद्ध 1 राजकीय, 7 एडिड एवं 67 स्ववित्तपोषी अधिकांश कालेजों में छात्रों को प्रवेश तो दिया जाता है परन्तु शिक्षण-व्याख्यान नहीं होता है। इन कालेजों में परीक्षाकाल में छात्र उपस्थित रहते हैं और इनको बोल-बोलकर या पुस्तकों से नकल करायी जाती है। विश्वविद्यालय के उड़नदस्ते इन कालेजों से रु. 20000-25000 तक सही रिपोर्ट जमाने के नाम पर वसूल करते हैं। स्ववित्तपोषी कालेज के प्राचार्य-प्राध्यापकों के साक्षात्कार लेने वाली समिति के लोग विश्वविद्यालय गेस्ट हाउस में बैठकर प्रत्येक सदस्य कालेज प्रबन्धकों से 15000 रुपये से जरा लिफाफा लेता है। इसके अतिरिक्त सर्वाधिक चौकाने वाली बात यह है कि विश्वविद्यालय परीक्षा में बैठने के लिए प्रत्येक छात्र-छात्रा की उपस्थिति 75% अनिवार्य होने के बावजूद तथा कालेज-कक्षाओं एवं पुस्तकालयों में कैमरे लगे होने के बावजूद छात्र-छात्राएँ अनुपस्थित रहते हैं और उनकी उपस्थिति 75% पूरी होकर परीक्षा में शामिल कर बिना शिक्षण नकल परीक्षा की डिग्री बाँटी जा रही हैं, जो व्यक्ति-समाज के लिए व्यर्थ सिद्ध हो रही है।

कालेजों की अधिकांश प्रबन्ध समितियों के पदाधिकारी एवं सदस्य स्थानीय समुदायों के जन-साधारण, शिक्षाविद्, समाजसेवी, अभिभावक नहीं हैं और न ही निर्धारित प्रशासन योजना के मानकानुरूप है। अमानक प्रबन्धतंत्रों के पदाधिकारी सगे-सम्बन्धी एवं आपसी हितबद्ध हैं। यह अपने निजी लाभ के लिए सार्वजनिक





